

**सुनपेड़ा एवं बकस्वा का ऐतिहासिक एवं
सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन
(भाटी राजपूत वंशावली, पोथी-साक्ष्य, धर्मांतरण एवं
साझा लोक-संस्कृति के विशेष सन्दर्भ में)**

विघ्नेश कुमार¹ एवं ऋषभ यादव²

¹प्रोफेसर, इतिहास विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

E-mail: <vighneshkmr@gmail.com>

²शोधार्थी, इतिहास विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

E-mail: <yrishabh147@gmail.com>

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में जनपद बुलन्दशहर की तहसील सिकन्दराबाद क्षेत्र के ग्राम सुनपेड़ा एवं बकस्वा के ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास का अध्ययन किया गया है। शोध का प्रमुख आधार स्थानीय मौखिक परम्पराएँ, भाटी राजपूतों की वंशावली-पोथियाँ तथा क्षेत्रीय साक्षात्कार हैं। उपलब्ध सामग्री में सुनपेड़ा की स्थापना-परम्परा, भाटी वंश की वंश-स्मृति, 1460 ई0 से सम्बद्ध जय कंवर के सती-स्थल का पोथी-साक्ष्य तथा 1705 ई0 से सम्बद्ध ऐदल सिंह की कथा विशेष महत्व रखती है। अध्ययन का केन्द्रीय प्रश्न धर्मांतरण के पश्चात् सामाजिक एवं सांस्कृतिक निरन्तरता है। स्थानीय परम्परा के अनुसार ऐदल सिंह से जुड़ी घटना के बाद सुनपेड़ा से पृथक होकर बकस्वा के बसने की प्रक्रिया सामने आती है। इसके पश्चात् मुस्लिम भाटी परिवारों में भी भाटी वंश, गोत्र-मर्यादा, पारिवारिक स्मृति तथा अनेक लोकाचारों की निरन्तरता दिखाई देती है। गोवर्धन पूजा में सुनपेड़ा के पण्डित का मार्गदर्शन, गृह-वास्तु पूजा, जन्म एवं छठी, विवाह की मढ़ा-बान-भात जैसी रस्में तथा दोनों गाँवों के बीच सामाजिक सहयोग इस निरन्तरता के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। शोध यह प्रतिपादित करता है कि धार्मिक पहचान में परिवर्तन तथा सामाजिक-सांस्कृतिक स्मृति का संरक्षण एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। फिर भी, स्थानीय आख्यानों एवं पोथी-साक्ष्यों की ऐतिहासिकता का परीक्षण अन्य अभिलेखीय, साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों से किया जाना आवश्यक है।

प्रमुख शब्द

[सुनपेड़ा, बकस्वा, भाटी राजपूत, वंशावली-पोथी, मौखिक इतिहास, धर्मांतरण, साझा लोक-संस्कृति, बुलन्दशहर।]

Centre For Studies of National Development, Meerut

Editorial Office : D-59, Shastri Nagar, Meerut - 250 004 (INDIA)

Ph. : 0121-2763765, +91-9997771669, +91-9412200765

5

सुनपेड़ा एवं बकस्वा का ऐतिहासिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन (भाटी राजपूत वंशावली, पोथी-साक्ष्य, धर्मांतरण एवं साझा लोक-संस्कृति के विशेष सन्दर्भ में)

1. प्रस्तावना

स्थानीय इतिहास किसी क्षेत्र के अतीत को केवल राजकीय अभिलेखों, युद्धों एवं शासकों की घटनाओं के माध्यम से नहीं समझता, बल्कि गाँवों की स्थापना-कथाओं, वंशावली, पारिवारिक स्मृतियों, धार्मिक स्थलों, लोक-रिवाजों एवं जीवित सामाजिक सम्बन्धों को भी ऐतिहासिक अध्ययन का महत्वपूर्ण आधार मानता है। इसी दृष्टि से सुनपेड़ा एवं बकस्वा का अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इतिहास की एक महत्वपूर्ण इकाई प्रस्तुत करता है। उपलब्ध क्षेत्रीय सामग्री में दोनों गाँवों के भाटी राजपूत परिवारों को एक ही वंशावली परम्परा की परस्पर सम्बद्ध शाखाओं के रूप में स्मरण किया गया है। क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान लम्बे समय में विभिन्न अवसरों पर साक्षात्कार एवं पोथी-मिलान किए गए।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य सुनपेड़ा एवं बकस्वा की ऐतिहासिक उत्पत्ति एवं भाटी राजपूत वंश-परम्परा को समझना, वंशावली-पोथी एवं मौखिक इतिहास की भूमिका का परीक्षण करना तथा धर्मांतरण के बाद भी बनी रही सामाजिक-सांस्कृतिक निरन्तरता का अध्ययन करना है। इसके साथ ही गोत्र-मर्यादा, विवाह-नियम, जन्म-संस्कार, विवाह-परम्पराएँ, धार्मिक एवं सामाजिक सहभागिता तथा दोनों गाँवों के पारिवारिक सम्बन्धों को समझना भी शोध का उद्देश्य है।

3. शोध-पद्धति एवं स्रोत

यह अध्ययन क्षेत्रीय इतिहास तथा नृवंशविज्ञानात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में भाट राय जी की वंशावली-पोथी, स्थानीय पारिवारिक वंशावली एवं शजरे, तथा सुनपेड़ा एवं बकस्वा के निवासियों से लिए गए मौखिक साक्षात्कार प्रमुख हैं। लम्बे समय में विभिन्न अवसरों पर श्री इलियास भाटी, श्री कुलदीप भाटी तथा अन्य स्थानीय सूचनादाताओं से लिए गए साक्षात्कारों से प्राप्त सामग्री का उपयोग किया गया है। उपलब्ध पोथी-साक्ष्य में 1460 ई0 एवं 1705 ई0 से सम्बन्धित प्रविष्टियों का उल्लेख है। शोध की दृष्टि से इन स्रोतों को स्थानीय ऐतिहासिक स्मृति के रूप में ग्रहण करना आवश्यक है; इन्हें अन्तिम प्रमाण मानने के बजाय अन्य ऐतिहासिक स्रोतों से तुलनात्मक परीक्षण अपेक्षित है।

4. सुनपेड़ा की स्थापना एवं भाटी वंश की स्थानीय स्मृति

स्थानीय वंशावली-परम्परा में सुनपेड़ा की स्थापना को भाटी राजपूतों के क्रमिक क्षेत्रीय विस्तार से जोड़ा गया है। परम्परा के अनुसार राजा वरसल सिंह के इस अंचल में स्थायी निवास के पश्चात् उनके वंशजों ने विभिन्न स्थानों पर गाँव बसाए तथा अन्ततः सुनपेड़ा इस वंशीय विस्तार की एक प्रमुख कड़ी बना। इस प्रकार गाँव की स्मृति केवल भौगोलिक बसावट की कथा नहीं है, बल्कि भूमि, वंश एवं सामाजिक संगठन के परस्पर सम्बन्ध को भी व्यक्त करती है।

5. 1460 ई० का जय कंवर सती-स्थल एवं साझा पूर्वज-स्मृति

भाट राय जी की पोथी में सुमेर सिंह के पिता भादिन अथवा बहादीन की पत्नी जय कंवर का उल्लेख मिलता है। स्थानीय परम्परा उन्हें सपनावत, हापुड़ क्षेत्र के गहलोत/सिसोदिया राजवंश से जोड़ती है। पोथी के अनुसार 1460 ई० में पति की मृत्यु के बाद जय कंवर के सती होने की स्मृति इस क्षेत्र में संरक्षित रही। उल्लेखनीय है कि स्थानीय कथन के अनुसार यह स्थल हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों भाटी राजपूत परिवारों के लिए पूर्वज-स्मृति से जुड़ा हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि धर्मांतरण के बाद भी साझा वंशीय अतीत की स्मृति सामाजिक जीवन में बनी रह सकती है।

6. ऐदल सिंह का धर्म-संकट एवं बकस्वा का उदय, 1705 ई०

सुनपेड़ा से बकस्वा के अलग अस्तित्व की सबसे प्रमुख स्थानीय कथा ऐदल सिंह से जुड़ी है। वंशावली-पोथी की परम्परा के अनुसार ऐदल सिंह पर पठानों के साथ भोजन करने का आरोप लगा तथा इस घटना को उस समय की राजपूती सामाजिक मर्यादा के उल्लंघन के रूप में देखा गया। इसके बाद बारह गाँवों की पंचायत बुलाई गई तथा ऐदल सिंह को बिरादरी से अलग किए जाने का निर्णय लिया गया। स्थानीय परम्परा के अनुसार उन्हें सुनपेड़ा से लगभग 500 मीटर दूर 8,000 बीघा भूमि प्रदान की गई तथा यही क्षेत्र आगे चलकर बकस्वा के रूप में विकसित हुआ। इस कथा में धर्मांतरण, सामाजिक बहिष्कार, भूमि-वितरण एवं नई बस्ती के निर्माण की प्रक्रियाएँ एक-दूसरे से जुड़ी दिखाई देती हैं।

7. धर्मांतरण: धार्मिक परिवर्तन से सामाजिक पहचान तक

उपलब्ध वंशावली एवं मौखिक परम्पराओं के आधार पर इस क्षेत्र में धर्मांतरण को एक ही समय में घटित हुई घटना के बजाय एक ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में समझा जाना चाहिए। स्थानीय परम्परा ऐदल सिंह के धर्मांतरण को लगभग 1705 ई० के आसपास रखती है। इसी प्रकार, क्षेत्र की अन्य वंशावली परम्पराओं में भी अलग-अलग समय में धर्मांतरण की स्मृतियाँ मिलती हैं। यहाँ धर्मांतरण का अर्थ केवल उपासना-पद्धति में परिवर्तन नहीं था; इससे व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, बिरादरी सम्बन्ध एवं नई धार्मिक पहचान भी प्रभावित हुई। फिर भी, बकस्वा के मुस्लिम भाटी परिवारों में भाटी वंश, अत्रि गोत्र एवं पूर्वजों की स्मृति का संरक्षण यह दर्शाता है कि धार्मिक परिवर्तन के बाद भी पूर्ववर्ती सामाजिक संरचनाओं के अनेक तत्त्व जीवित रहे।

8. गोत्र-मर्यादा एवं विवाह सम्बन्ध

क्षेत्रीय साक्षात्कारों में बताया गया कि बकस्वा के मुस्लिम भाटी परिवार अपने ही भाटी गोत्र अथवा ननिहाल के गोत्र में विवाह सम्बन्ध स्वीकार नहीं करते। विवाह सम्बन्ध अन्य क्षत्रिय मुस्लिम परिवारों, जैसे सोलंकी, राघव, सिसोदिया, तोमर एवं चौहान आदि में निर्धारित किए जाने की परम्परा का उल्लेख मिलता है। यह तथ्य धर्मांतरण के बाद भी गोत्रीय स्मृति एवं विवाह-सम्बन्धी सामाजिक मर्यादा के बने रहने की ओर संकेत करता है। इस प्रकार, धार्मिक पहचान एवं वंशीय पहचान को स्थानीय समाज में अलग-अलग स्तरों पर संचालित होने वाली संरचनाओं के रूप में देखा जा सकता है।

9. साझा धार्मिक एवं लोक-सांस्कृतिक परम्पराएँ

धर्मांतरण के बाद साझा लोक-सांस्कृति का सबसे रोचक पक्ष धार्मिक एवं पारिवारिक अनुष्ठानों में दिखाई देता है। उपलब्ध साक्ष्य के अनुसार बकस्वा के मुस्लिम भाटी परिवारों में गोवर्धन पूजा की परम्परा की स्मृति बनी रही। पूजा के मन्त्र, नियम एवं विधि समझाने के लिए सुनपेड़ा के पारम्परिक हिन्दू पण्डित के उनके घर आने का उल्लेख मिलता है। यह घटना केवल धार्मिक अनुष्ठान का उदाहरण नहीं, बल्कि दोनों गाँवों के बीच पुरोहिती, पारिवारिक स्मृति एवं सामाजिक विश्वास के सम्बन्ध का भी संकेत देती है। इसी प्रकार, पक्के मकान के निर्माण के समय नींव पूजन तथा मुख्य चौखट पर कलश, स्वस्तिक एवं कलावा से सम्बन्धित लोकाचार का पालन किए जाने की जानकारी मिलती है।

10. जन्म, छठी एवं छूछक की परम्पराएँ

बकस्वा के मुस्लिम भाटी परिवारों में नवजात शिशु के जन्म के बाद छठे दिन 'छठी' मनाने, ननिहाल पक्ष से छूछक लाने तथा नवजात को पहली बार खुले आकाश के नीचे तारा दिखाने जैसी रस्मों का उल्लेख क्षेत्रीय साक्षात्कारों में मिलता है। इन परम्पराओं में ननिहाल की भूमिका, स्त्रियों की सहभागिता एवं नेग जैसी सामाजिक प्रथाएँ भी जुड़ी हुई हैं। ये संस्कार यह समझने में सहायता करते हैं कि धार्मिक पहचान बदलने के बाद भी पारिवारिक एवं लोक-सांस्कृतिक व्यवहार किस प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित हो सकता है।

11. विवाह की लोक-संस्कृति: मढ़ा, बान, भात एवं बूढ़ा बाबू

मुस्लिम भाटी परिवारों के विवाहों में निकाह धार्मिक विधान के रूप में सम्पन्न होता है; किन्तु उसके साथ कुछ पारम्परिक राजपूती एवं स्थानीय लोकाचार भी जुड़े होने की सूचना मिलती है। विवाह से पहले हल्दी एवं तेल चढ़ाने के लिए 'बान' बैठाना, आँगन में 'मढ़ा' गाड़ना, मामा पक्ष द्वारा भात भरना, पूर्वज या कुल-परम्परा से जुड़े 'बूढ़ा बाबू' की स्मृति, ढोलक पर बन्ना-बन्नी के गीत, कंगना बाँधना तथा घुड़चढ़ी जैसी रस्में इस सांस्कृतिक निरन्तरता के उदाहरण हैं। इससे पता चलता है कि धार्मिक अनुष्ठान की प्रकृति बदल सकती है, परन्तु विवाह की सामाजिक एवं पारिवारिक संरचना लम्बे समय तक अपनी स्थानीय विशेषताएँ बनाए रख सकती है।

12. सामाजिक सहभागिता एवं पारस्परिक सहयोग

सुनपेड़ा एवं बकस्वा के सम्बन्ध केवल वंशावली या विवाह-परम्पराओं तक सीमित नहीं हैं। स्थानीय साक्षात्कारों के अनुसार यज्ञ या मेले के आयोजन में बकस्वा के मुस्लिम परिवार अपनी क्षमता के अनुसार दान-चन्दा देते हैं तथा बकस्वा के सामाजिक आयोजनों में सुनपेड़ा के हिन्दू भाटी परिवार भी सहयोग करते हैं। इस प्रकार, धार्मिक भिन्नता के बावजूद सामाजिक सहयोग की परम्परा दोनों गाँवों के साझा अतीत को वर्तमान में सक्रिय रखती है।

13. भूमि, वंश एवं सामाजिक संगठन

स्थानीय परम्परा में सुनपेड़ा के संस्थापक सुमेर सिंह के पास लगभग 35,000 बीघा कृषि भूमि होने का उल्लेख मिलता है। उपलब्ध सामग्री में 700 बीघा भूमि बहन को 'राखी बन्धाई' के अवसर पर तथा 1705 ई0 में ऐदल सिंह को 8,000 बीघा भूमि दिए जाने की परम्परा दर्ज है। इन विवरणों को स्थानीय वंशावली-स्मृति के सन्दर्भ में देखना चाहिए। यदि भविष्य के अभिलेखीय शोध से इन दावों की पुष्टि होती है, तो यह भूमि-वितरण, वंशीय अधिकार एवं ग्रामीण सामाजिक संगठन के इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाल सकता है।

14. निष्कर्ष

सुनपेड़ा एवं बकस्वा का अध्ययन स्थानीय इतिहास की उस जटिल प्रकृति को सामने लाता है जिसमें वंश, धर्म, भूमि, सामाजिक मर्यादा एवं लोक-संस्कृति एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। उपलब्ध मौखिक साक्ष्यों एवं वंशावली-पोथियों में दोनों गाँवों को एक साझा भाटी वंशीय परम्परा की शाखाओं के रूप में स्मरण किया गया है। 1460 ई0 से सम्बन्धित जय कंवर की स्मृति तथा 1705 ई0 में ऐदल सिंह से जुड़ी बकस्वा की स्थापना-कथा इस स्थानीय ऐतिहासिक स्मृति के प्रमुख आधार हैं। विशेष रूप से धर्मांतरण का प्रसंग इस अध्ययन को विशिष्ट बनाता है। धार्मिक पहचान में परिवर्तन के बाद भी गोत्रीय स्मृति, विवाह सम्बन्धी मर्यादा, पूर्वजों का सम्मान, जन्म-संस्कार, विवाह की लोक-परम्पराएँ, गृह-वास्तु सम्बन्धी रीति तथा सामाजिक सहयोग जैसी अनेक परम्पराएँ जीवित रहीं। अतः सुनपेड़ा एवं बकस्वा का इतिहास यह संकेत देता है कि धर्मांतरण को केवल धार्मिक पहचान के परिवर्तन के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है, इसके साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक निरन्तरताओं का अध्ययन भी आवश्यक है। साथ ही, इस शोध में प्रयुक्त स्थानीय आख्यानों एवं पोथी-साक्ष्यों की ऐतिहासिकता का अन्तिम निर्धारण अभिलेखीय,

साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों के तुलनात्मक अध्ययन के बाद ही किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से सुनपेड़ा-बकस्वा क्षेत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थानीय इतिहास, धर्मांतरण एवं साझा लोक-संस्कृति के अध्ययन की एक महत्वपूर्ण केस-स्टडी प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ, प्राथमिक स्रोत एवं मौखिक साक्षात्कार

1. भाट राय जी की वंशावली-पोथी, भीलवाड़ा—भाटी राजपूत वंशावली सम्बन्धी पारम्परिक स्रोत।
2. राजेंद्र सिंह राय की वंशावली-पोथी—स्थानीय पारिवारिक एवं वंशावली सम्बन्धी अप्रकाशित स्रोत।
3. सुनील राय जी की वंशावली-पोथी—स्थानीय पारिवारिक एवं वंशावली सम्बन्धी अप्रकाशित स्रोत।
4. सुनपेड़ा एवं बकस्वा की स्थानीय पारिवारिक वंशावली एवं शजरे।
5. लम्बे समय में विभिन्न अवसरों पर किए गए क्षेत्रीय मौखिक साक्षात्कार।
6. श्री इलियास भाटी, श्री कुलदीप भाटी एवं अन्य स्थानीय सूचनादाताओं से प्राप्त क्षेत्रीय साक्ष्य।

टिप्पणी—मौखिक साक्ष्यों को स्थानीय ऐतिहासिक स्मृति के स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है। इनके आधार पर प्रस्तुत दावों का अन्तिम ऐतिहासिक निर्धारण स्वतन्त्र अभिलेखीय, साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों के तुलनात्मक परीक्षण के बाद किया जाना अपेक्षित है।

टिप्पणी—इस शोध-पत्र के लिए विभिन्न स्थानीय सूचनादाताओं से अलग-अलग समय में लिए गए मौखिक साक्षात्कारों का उपयोग किया गया है। साक्षात्कारों में प्राप्त वंशावली, सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं, धर्मांतरण सम्बन्धी स्थानीय स्मृतियों तथा सुनपेड़ा एवं बकस्वा के पारस्परिक सम्बन्धों से सम्बन्धित विवरणों को स्थानीय ऐतिहासिक स्मृति के स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है। साक्षात्कारों का उल्लेख निम्नवत् है—

- i. **साक्षात्कार:** दिनांक 23 जुलाई 2026, श्री इलियास भाटी, आयु 82 वर्ष, पुत्र श्री शेर दीन, पुत्र श्री छिद्दन, पुत्र श्री रोशन, पुत्र श्री जौहरी, पुत्र श्री इमाम बक्श, पुत्र श्री ऐदल सिंह, पुत्र श्री बिलोची; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- ii. **साक्षात्कार:** दिनांक 23 जुलाई 2026, श्री कुलदीप भाटी आयु 30 वर्ष पुत्र श्री मेघराज भाटी पुत्र श्री देवी राम पुत्र श्री कंसन सिंह पुत्र श्री हर गोविंद पुत्र श्री नत्थू सिंह पुत्र श्री हरजीवन; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—सुनपेड़ा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- iii. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 202, श्री साबिर, आयु 38 वर्ष, पुत्र श्री फारूख, पुत्र श्री शकील; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- iv. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, श्री हारून, आयु 42 वर्ष, पुत्र श्री सलीम भाटी, पुत्र श्री रियासत भाटी, पुत्र श्री रहीम; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- v. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, श्री रियाज मोहम्मद, आयु 58 वर्ष, पुत्र श्री इलियास भाटी, पुत्र श्री शेर दीन, पुत्र श्री छिद्दन, पुत्र श्री रोशन, पुत्र श्री जौहरी, पुत्र श्री इमाम बक्श, पुत्र श्री ऐदल सिंह, पुत्र श्री बिलोची सिंह; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- vi. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, श्री रिजवान, आयु 30 वर्ष, पुत्र श्री रियाज मोहम्मद, पुत्र श्री इलियास भाटी, पुत्र श्री शेर दीन, पुत्र श्री छिद्दन, पुत्र श्री रोशन, पुत्र श्री जौहरी, पुत्र श्री इमाम बक्श, पुत्र श्री ऐदल सिंह, पुत्र श्री बिलोची; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- vii. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, श्री आरिफ, आयु 34 वर्ष, पुत्र श्री मोहम्मद भाटी, पुत्र श्री शेर खान, पुत्र श्री रहीम; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।

- viii. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, श्री जुनैद, आयु 28 वर्ष, पुत्र श्री शाहिद भाटी, पुत्र श्री उम्मेद भाटी; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- ix. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, श्री सलीम, आयु 49 वर्ष, पुत्र श्री रियासत भाटी, पुत्र श्री अकबर भाटी; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- x. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, श्री शकील आयु 52 वर्ष, पुत्र श्री जमील, पुत्र श्री मेहराज; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- xi. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, श्री अशाफाक, आयु 43 वर्ष, पुत्र श्री रफीक भाटी, पुत्र श्री आलमगीर, पुत्र श्री मोमीन खान; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- xii. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, श्री फहीम, आयु 57 वर्ष, पुत्र श्री लियाकत भाटी, पुत्र श्री अहमद; गोत्र—अत्रि, भाटी राजपूत, निवासी—बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
- xiii. **साक्षात्कार:** दिनांक 19 जुलाई 2026, 13 अन्य, 34-35 ग्रामीण एवं स्थानीय सूचनादाता; निवासा—सुनपेड़ा एवं बकस्वा, तहसील—सिकन्दराबाद, पोस्ट—बंचावली, जनपद—बुलन्दशहर।
7. स्थानीय वंशावली-पोथियों में उल्लिखित वंशक्रम को इस अध्ययन में स्थानीय ऐतिहासिक स्मृति के स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है।
8. 1460 ई0 से सम्बन्धित जय कंवर की स्मृति एवं 1705 ई0 से सम्बन्धित ऐदल सिंह की कथा के लिए उपलब्ध वंशावली एवं मौखिक परम्परा का तुलनात्मक उपयोग किया गया है।
9. धर्मांतरण के बाद गोत्र, विवाह-नियम, पारिवारिक संस्कार तथा लोकाचार की निरन्तरता सम्बन्धी विवरण विभिन्न स्थानीय मौखिक साक्षात्कारों से प्राप्त हुए हैं।
10. भूमि, वंशीय अधिकार एवं सामाजिक संगठन से सम्बन्धित स्थानीय दावों की स्वतन्त्र अभिलेखीय पुष्टि भविष्य के शोध का विषय है।
11. मौखिक साक्षात्कारों से प्राप्त कथनों को स्थानीय ऐतिहासिक स्मृति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, उन्हें अन्तिम एवं निर्विवाद ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में नहीं माना गया है।

वंशावली



